कार्ल मार्क्स

मार्क्स का अलगाव का सिद्धांत -

यह स्वैच्छिक कार्य न होकर मजबूरी में किया जानेवाला कार्य होता है। यहाँ ऐसी क्या बात है जो श्रम को मजबूरी का कार्य बना देती है। यह श्रमिक के श्रम की प्रकृति नहीं बल्कि यह ऐतिहासिक अवस्थाएँ है जिनमें श्रमिक द्वारा श्रम या मजबूरी की जाती है। इसलिए जो समाज अलगाव को समाप्त करेगा वह श्रम को समाप्त नहीं करेगा वह केवल उन अलगावकारी परिस्थितियों ~~का~~ को समाप्त करेगा, जिनमें श्रम किया जाता है। दूसरे शब्दों में, श्रम समाजवादी और साम्यवादी समाज में रहेगा लेकिन यह मजबूरी में की जानेवाली गतिविधी नहीं होगा। एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या कार्य उस श्रमिक के अस्तित्व का साधन है। या वह उसके जीवन का एक हिस्सा बन जाता है। इसका अभिप्राय है कि साम्यवादी सरकार के अंतर्गत भी व्यक्ति के श्रम से वस्तुओं का उत्पादन जारी रहेगा लेकिन अलगाव नहीं होगा।

ऊपर दिए गए विवरण में आपने देखा होगा कि पूँजीवादी समाज में जिस रूप में अलगाव विद्यमान है इसके कई आयाम है। लेकिन इसमें से तीन आयाम प्रमुख है—

(I) मनुष्य की प्रकृति से अलगाव

(II) मानव समुदाय या सहकर्मियों से अलगाव

(III) स्वयं से अलगाव।

प्रकृति से अलगाव से मतलब है—श्रमिक का अपनी योग्यता और विश्व को निर्माण करने की क्षमता से अलगाव क्योंकि उसे यह विश्व उसके मालिक के रूप में दिखाई देता है। दूसरे अलगाव का एक कारण यह है कि श्रमिक अपने श्रम से पैदा की गई वस्तुओं का मालिक नहीं हो सकता क्योंकि वे किसी दूसरे की होती है। इतना ही नहीं उसके द्वारा किया गया श्रम उसका अपना नहीं होता क्योंकि उसने उसे किसी दूसरे को बेच दिया होता है। इसके अलावा उसके श्रम से पैदा होनेवाली वस्तु का जो मूर्त रूप है वह भी उसका नहीं है। इस प्रकार वह अपने श्रम से पैदा की गई वस्तु से अन्येशीकृत हो जाता है। उसने जिस वस्तु का उत्पादन किया वह बाहरी अस्तित्व ग्रहण कर लेती है। उस वस्तु का उसके बाहर स्वतंत्र अस्तित्व है और वह उसे पराई लगती है।